# कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, अक्टूबर 2023 | वर्ष 1, अंक 2, पृष्ठ 4


# डीयू छात्रसंघ : अभाविप ने लहराया जीत का परचम

**राम कुमार पांडे**

**नई दिल्ली ।** दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव 2023 के नतीजे घोषित हो चुके हैं। कोरोना काल आने के कारण 2019 के बाद अब 2023 में तीन साल के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनाव कराए गए।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के सेंट्रल पैनल के पदों पर अपनी दावेदारी ठोंकते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) **ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (एआईएसए),** स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) और **नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई)** सहित विभिन्न छात्र संघ समूहों के कुल 24 उम्मीदवार मैदान में थे।

लगभग तीन साल बाद डूसू चुनाव होने के कारण छात्रों का जोश और उत्साह देखते हुए दिल्ली पुलिस ने चुनाव के दिन सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे। छात्र संघ चुनाव के लिए इस बार एक लाख 17 हजार विद्यार्थियों ने वोट डाले हैं, जिसके लिए 52 वोटिंग सेंटर बनाए गए थे और 173 ईवीएम के जरिये ये वोटिंग की गई थी।

दिल्ली विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैम्पस में चुनाव के बाद जीत का जश्न मनाते जीते हुए प्रत्याशी।

इस चुनाव में उम्मीदवारों द्वारा विद्यार्थियों के जो मुद्दे उठाए उनमें मुख्यतः फीस वृद्धि, किफायती आवास का अभाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुधार की गुंजाइश और मासिक धर्म अवकाश आदि चुनाव में छात्रों के लिए मुख्य मुद्दे रहे।

इन्ही मुद्दों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के सेंट्रल पैनल के लिए चार पदों अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और उपसचिव के लिए वोट डाले गए। दिल्ली विश्वविद्यालय के 52 कॉलेजों और विभागों के छात्रों ने 22 सितंबर को 2023 को डूसू पैनल के चयन के लिए अपना कीमती वोट डाला।

| पद | ABVP | NSUI | SFI | AISA |
|---|---|---|---|---|
| अध्यक्ष | तुषार डेढा | हितेश गुलिया | आरिफ़ सिद्दीकी | आईशा खान |
| उपाध्यक्ष | शुशान्त धनकर | अभी दहिया | अंकित विरपाली | अनुष्का चौधरी |
| सचिव | अपराजिता | यक्षना शर्मा | अदिति त्यागी | आदित्य सिंह |
| उपसचिव | सचिन बैसला | शुभम चौधरी | निष्ठा | अंजली कुमारी |

| वोट | पद | नियुक्त उम्मीदवार |
|---|---|---|
| 21,555 | अध्यक्ष | तुषार डेढ़ा |
| 19,703 | उपाध्यक्ष | अभी दहिया |
| 22,562 | सचिव | अपराजिता |
| 22,833 | उपसचिव | सचिन बैसला |

चुनाव के अगले दिन ही वोट गिनती की प्रक्रिया भी शुरू हो गई और 23 सितंबर को ही दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के नतीजे घोषित कर दिए गए। डूसू चुनाव 2019 की तरह ही डूसू चुनाव 2023 के परिणाम भी पूरी तरह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के हक में रहे। डूसू 2023 में अभाविप ने तीन पदों–अध्यक्ष, सचिव व उपसचिव पद पर जीत हासिल की, वहीं कांटे की टक्कर के बाद उपाध्यक्ष पद पर नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया ने जीत हासिल की।

## आरएलए के अध्यक्ष बने मनस्वी बांगड़

मनस्वी बांगड़

अलीना सिन्हा

अर्जुन दीक्षित

**इस** वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनाव के साथ–साथ महाविद्यालय के छात्र संघ का भी गठन किया गया। रामलाल आनंद महाविद्यालय के छात्रों ने डूसू के प्रत्याशियों को मतदान के साथ महाविद्यालयी छात्र संघ के प्रत्याशियों को भी मतदान किया।

जिसके नतीजे कुछ इस प्रकार रहे। महाविद्यालय छात्र संघ में राजनीतिक विज्ञान के तृतीय वर्ष के छात्र मनस्वी बांगड़ को अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। उपाध्यक्ष पद पर बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष से अलीना सिन्हा को चुना गया और उप सचिव के पद पर बी.ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष के अर्जुन दीक्षित ने बाजी मारी। छात्र संघ के सचिव और केंद्रीय पार्षद के लिए कोई योग्य प्रत्याशी न होने के कारण उन्हें रिक्त छोड़ दिया गया।

# आइए, रचनात्मक लेखन के तौर–तरीके सीखिए

**अरविंद सिंह**

**नई दिल्ली ।** राम लाल आनंद महाविद्यालय की अभिव्यक्ति समिति की ओर से 5 अक्टूबर को ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति (हिन्दी रचनात्मक लेखन समिति) के बारे में अवगत कराना था कि वह किस तरह से अपने को प्रस्तुत करें।

कार्यक्रम की शुरुआत समिति के अनुभवी सदस्य रामकुमार पाण्डेय ने समिति का परिचय देते हुए की। इसके पश्चात् मंच का संचालन समिति की उप–सचिव खुशी वशिष्ठ एवं कार्यकारणी सदस्य शिवांश सक्सेना ने किया। उन्होंने एक प्रस्तुति के माध्यम से समिति के विगत एवं आगामी कार्यों के बारे में बताया। इसी प्रकिया में समिति के संयोजक डॉ. मानवेश नाथ दास व उप–संयोजक रोशन लाल मीणा ने विद्यार्थियों को संबोधित कर उनका मार्गदर्शन किया व विद्यार्थियों को समिति में जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इसके उपरांत समिति की अध्यक्ष अविशी खुराना ने समिति की चयन प्रक्रिया से विद्यार्थियों को अवगत कराया, जिसमें उन्होंने चयन प्रतियोगिता के बारे में बताया। जो कि तीन चरणों से होकर गुजरेगी। तीनों चरणों की प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद ही अभिव्यक्ति समिति का सदस्य बना जा सकता है।

अंत में विद्यार्थियों ने एक के बाद एक सवाल–जवाब का सिलसिला चलाया, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा समिति और चयन प्रक्रिया से संबन्धित प्रश्न पूछे गए। इसका समिति के पदाधिकारियों ने स्पष्ट तौर पर जवाब दिया। इसी के साथ ओरिएंटेशन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

# नया 'इल्यूजन'

**निहारिका**

**नई दिल्ली :** राम लाल आनंद महाविद्यालय की वेस्टर्न डांस सोसायटी 'इल्यूजन' ने 21 सितम्बर को महाविद्यालय के मेन स्टेज पर अपना ओरिएन्टेशन कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत में ही इल्यूजन ने नृत्य के माध्यम से सबका ध्यान अपनी ओर केन्द्रित किया।

इल्यूजन ने अपना परिचय एक शानदार नृत्य के माध्यम से दिया। इसके बाद समिति के सदस्य, विद्यार्थियों के बीच गए। उन्हें साथ में नृत्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। सोसाइटी की प्रेसीडेंट समृद्धि ने विद्यार्थियों को वेस्टर्न डांस के अलग अलग फॉर्म्स के बारे में जानकारी दी। अंत में विद्यार्थियों को समिति में जुड़ने के लिए ऑडीशन व साक्षात्कार की सूचना दी गई, जिसके माध्यम से प्रथम वर्ष के विद्यार्थी इल्यूजन (वेस्टर्न डांस सोसायटी) से जुड़ सकेंगे यानी इसका हिस्सा बन सकेंगे।

# बेहतर रणनीति ने हमें उत्कृष्ट बनाया

रामलाल आनंद महाविद्यालय के एनसीसी के पूर्व छात्र ने अपने विचार साझा किए।

**राम कुमार पांडे**

**नई दिल्ली ।** राम लाल आनंद कॉलेज, 7 डीबीएन की एनसीसी इकाई की ओर से आयोजित किया गया कार्यक्रम महाविद्यालय के सेमिनार कक्ष में आयोजित हुआ, जहां एनसीसी के सभी कैडेट मौजूद रहे। कहते हैं न कि नेतृत्व सामान्य लोगों से असाधारण कार्य करवाने की क्षमता है और एक संस्था जो असाधारण नेतृत्व से भरी हुई है वह है भारतीय सेना। ऐसे नेताओं के साथ बातचीत करने का मौका मिलना जीवन भर का अनुभव है। ऐसा ही एक अवसर 25 सितंबर 2023 को था, जब राम लाल आनंद कॉलेज, 7 डीबीएन की एनसीसी इकाई ने अपने एक पूर्व कैडेट लेफ्टिनेंट चिराग शर्मा के व्याख्यान का आयोजन किया।

व्याख्यान श्रृंखला का उद्देश्य युवा कैडेटों को प्रेरित करना और उनकी शंकाओं का समाधान करना था। लेफ्टिनेंट चिराग शर्मा, जो अब भारतीय सेना के एक अधिकारी हैं, ने कैडेटों के साथ अपने अनुभव साझा किए। उन्हें चुनौतियों से निपटने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के बारे में सलाह दी।

लेफ्टिनेंट चिराग ने साझा किया कि उनकी अपनी तैयारी की रणनीति, अपने एसएसबी अनुभव, अपने ओटीए के दिनों और कैसे एनसीसी ने उन्हें अकादमी में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद की। उन्होंने इस बात पर भी अपने विचार साझा किए कि अकादमी में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ता है और कैसे अकादमी प्रशिक्षण ने उन्हें एक बेहतर इंसान बनाया है। यह व्याख्यान एक बड़ी सफलता थी। एनसीसी के कैडेट अपने को प्रेरित और उत्साहित महसूस कर रहे थे।

# चुनावों में पर्यावरण का सवाल

**लोकतंत्र** में चुनाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके जरिए नागरिक अपनी राय जाहिर करते हैं कि वे किसे प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करते हैं। देश व राज्य की तरह ही विश्वविद्यालय के छात्र भी प्रति वर्ष छात्रसंघ में अपने प्रतिनिधि भेजते हैं। वैसे तो छात्रसंघ चुनाव प्रति वर्ष होते रहे थे परंतु इस वर्ष के चुनाव कुछ खास थे। इसलिए कि वर्ष 2019 के बाद पहली बार चुनाव हुए हैं, इसलिए कैम्पस प्रचार से गुलज़ार रहा। कैम्पस कनेक्ट के इस अंक में आपको इन्हीं चुनावों पर चर्चा दिखाई देगी। ये चुनाव एक तरफ छात्रों की अभिव्यक्ति का प्रतीक बने वहीं पर्यावरण के हित की अनदेखी भी दिखी, जिसे छात्रों को विशेष रूप से छात्र प्रतिनिधियों को सोचना चाहिए कि किस प्रकार चुनावों में काग़ज़ की बर्बादी को रोका जा सकता है। राम लाल आनंद महाविद्यालय ने इस चुनावी प्रक्रिया में पर्यावरण की दृष्टि से ग्रीन रास्ते को चुना और काग़ज़ की कम से कम बर्बादी की। हम इसके लिए कॉलेज प्रशासन और विद्यार्थियों को बधाई देते हैं।

प्रो. राकेश कुमार

# शंकर को मिला राजकमल चौधरी सम्मान

**मीनाक्षी पंत**

**नई दिल्ली।** साहित्यिक संस्था मित्रनिधि ने चौथे राजकमल चौधरी सम्मान से लोकप्रिय कथाकार व परिकथा के संपादक शंकर को हाल ही में सम्मानित किया। गांधी शांति प्रतिष्ठान में हुए समारोह में वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी, लेखक राजकुमार शर्मा और जानकी प्रसाद शर्मा ने उन्हें स्मृति चिह्न, नकद पुरस्कार व उपहार देकर सम्मानित किया।

कथाकार शंकर ने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि यह पुरस्कार उनके जीवन का पहला पुरस्कार है। इसे पाकर वह गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि लेखन के शुरुआती दिनों में चेखव की कहानियों का उन पर काफी प्रभाव रहा। चेखव की रचनाओं को पढ़ते हुए उन्होंने तय किया कि वह चेखव की तरह लिखेंगे। शंकर को उर्दू की कहानियों से काफी कुछ सीखने को मिला। मोहन राकेश से किसी भी रचना में विजुअल उत्पन्न करना सीखा। इस तरह उन्होंने अपनी रचनाओं को बेहतर रूप देने का श्रेय चेखव, उर्दू भाषा व मोहन राकेश को दिया।

शंकर

हर दूसरे साल मित्रनिधि संस्था राजकमल चौधरी सम्मान समारोह का आयोजन करती है। इसमें किसी कवि व कथाकार पुरस्कृत किया जाता है। इस साल दिए गए सम्मान का चयन आलोचक जानकी प्रसाद शर्मा ने किया। श्री शर्मा ने शंकर को अपने समय का महत्वपूर्ण कथाकार बताते हुए 'परिकथा' के योगदान को भी रेखांकित किया।

समारोह में राजकमल चौधरी के पुत्र नीलमाधव चौधरी ने पिता की दो कविताओं का पाठ किया। कथाकार हरियश राय ने शंकर की कहानियों को याद करते हुए कहा कि वह मौजूदा दौर के एक ऐसे रचनाकार हैं, जिनसे हमारी भावी पीढ़ी काफी कुछ सीख सकती है। सभागार में रामकुमार कृषक, राधेश्याम तिवारी, राकेश रेणु, मदन कश्यप, हीरालाल नागर, बलराम अग्रवाल, कमलेश भट्ट कमल और अरविंद कुमार सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि तमाम रचनाकारों और घटनाक्रमों से कुछ न कुछ संग्रह करते हुए भी शंकर अपनी रचनाओं में शंकर बने रहते हैं। शंकर की रचनाओं को पढ़ते हुए शिल्प और लेखक की धारणा का कोई पता नहीं लगा सकता। ऐसा करना हर लेखक के बस की बात नहीं है।

# सिद्धांतों से डाइवर्ट होने से हमारा नुकसान होता है : योगेश नारायण

योगेश नारायण दीक्षित
साक्षात्कारदाता

शिवानी गुप्ता
साक्षात्कारकर्ता

**प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर रामलाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम पर 'अमर उजाला' के एसोसिएट संपादक *योगेश नारायण दीक्षित* का एक साक्षात्कार किया गया, जिसमें उनसे पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर सवाल किए गए। उस साक्षात्कार के प्रमुख अंश यहां पेश हैं...**

**आज की मीडिया क्या सच में स्वतंत्र है?**

देखिए, स्वतंत्र जितना एक व्यक्ति को होना चाहिए, जितना समाज को होना चाहिए, उतना मीडिया भी स्वतंत्र है। स्वतंत्रता, स्वतंत्रता होती है जब हम दूसरे की स्वतंत्रता का उल्लंघन नहीं करते हैं तब हम महसूस करते हैं कि हम खुद स्वतंत्र हैं। मीडिया जब नियंत्रित होकर कुछ भी काम करती है. चाहे जिस माध्यम से हो तो वो स्वतंत्र ही है।

**अनुछेद 19 मे वाणी की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में बात की गई है, लेकिन पत्रकारों के लिए कोई विशेष अनुछेद नहीं बनाया गया है। आपको क्या लगता है कि प्रेस को विशेष अधिकार देना चाहिए?**

हमें 25 साल से ज्यादा मीडिया में काम करने के बाद एक बात का अनुभव हुआ है कि हम जब समाज के ही हिस्से हैं, हम जब देश के ही हिस्से हैं। हमारे भी एक नागरिक के रूप में उतने ही कर्तव्य हैं, जितने आपके या किसी भी समाज के व्यक्ति के हैं। तो कोई भी अनुछेद या कानून हमारे लिए क्यों होना चाहिए। जब अनुछेद 19 के तहत हमको पूरी स्वतंत्रता मिली है। हमको अधिकार मिला हुआ है। हमको संरक्षण मिला हुआ है। हमको अतिरिक्त कोई कानून की जरूरत नहीं है, ये खास तौर से हम पत्रकारिता के बच्चों के लिए कहते हैं कि भाव ही नहीं आना चाहिए कि हम कुछ अतिरिक्त हैं। जैसे समाज के बाकी अंग काम करते हैं, उसी तरह से हम भी काम करते हैं या हम जिस प्रोफेशन में हैं वो समाज के प्रति उत्तरदायी है तो हमें अतिरिक्त किसी कानून की जरूरत नहीं लगती।

**विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2022 के तहत 180 देशों में से भारत का स्थान 150वां है, जो कि पहले से लगभग आठ स्थान नीचे गिरा है। इसके क्या कारण हो सकते हैं?**

देखिए, इसको दो तरीके से देखना चाहिए कि क्या वास्तव में हमारे देश में कोई ऐसा बदलाव हुआ है जो हमारा सूचकांक गिरा है या सूचकांक में हम पीछे हुए हैं या उनके मानक बदले हैं। जो रेटिंग एजेंसी या जो सूचकांक बनाने वाले मानक हैं उनमें कोई परिवर्तन किया गया है उसकी वजह से गिरे हैं तो हमें अपने को आत्ममंथन करना चाहिए। दूसरी बात यह है कि राष्ट्र में ऐसी क्या परिस्थितियां आई हैं या हमारे काम के दौरान ऐसी क्या परिस्थितियां हुई हैं जिससे हमारा सूचकांक गिरा है। इसको भी देखना होगा। यह चिंता का विषय नहीं मनन का विषय है।

**आपके अनुसार आज के दौर में मीडिया लोकतंत्र को प्रोत्साहित करने और सत्ताधारियों को जवाब देने में क्या भूमिका निभा रही है?**

इस समय क्या हुआ है कि मीडिया **वाइट** हो गया। मीडिया टर्म पहले हमारे जमाने में जब शुरुआत थी हमारी, जब हम आपकी तरह मीडिया में इंटर कर रहे थे तब केवल मीडिया मतलब होता था अखबार। अब मीडिया के अंदर सोशल मीडिया भी आ गया है। डिजिटल मीडिया भी आ गया है और इतना ज्यादा यह विस्तृत हो गया है कि अब हमें यह देखना होगा कि अखबार के अलावा दूसरे माध्यमों ने लोगों को ज्यादा पावर दे दिया है। लोग सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया के माध्यम से अपनी बात स्वयं रख पा रहे हैं। दूसरा पक्ष देखिए जो सरकार के तंत्र हैं या जो जिम्मेदार लोग हैं जो सरकारों में बैठे हैं वह भी एक ट्वीट के द्वारा अपनी बात लाखों करोड़ों लोगों तक पहुंचा रहे हैं। उनके फॉलोअर्स इतने ज्यादा हैं कि वह बात कहने के लिए लोकतंत्र में सबसे बड़ी चीज क्या है कि लोगों की बात सरकार तक पहुंचे और सरकार की बात लोगों तक पहुंचे। दोनों चीज आधुनिक मीडिया ने उपलब्ध करा दिया है। हमारा निजी विचार यह है कि मीडिया का क्षेत्र बढ़ने, दायरा बढ़ने और तकनीक बढ़ने से लोकतंत्र और मजबूत हुआ है। दूसरा प्रश्न यह है कि कितना उत्तरदायी ठहरा सकते हैं तो आपको एक उदाहरण बताएं। रेलवे में आप लोग यात्रा करते होंगे। हम भी करते थे। किसी को स्टेशन पर पानी न मिले तो वह प्यासा रहता था और अब हमने देखा है कि एक ट्वीट कर देने से रेल मंत्री अगले स्टेशन पर बच्चों को दूध पहुंचा दे रहे हैं यानी लोकतंत्र को और सरकारों को सोशल मीडिया, न्यू मीडिया, डिजिटल मीडिया ने इतना पावरफुल बना दिया है कि हमें लगता है कि लोगों के हक की बात ज्यादा होने लगी है।

**आज फेक न्यूज और वायरल खबरों के दौर में पत्रकार और सरकार मिल–जुल कर कैसे काम कर सकते हैं व इन चीजों से कैसे बचा जा सकता है?**

यह सवाल आज हर मंच पर उठ रहा है, लेकिन इसको हम दो तरीके से समझेंगे। पहले फेक न्यूज क्यों ज्यादा फैली, जब तकनीक का विकास हुआ और तकनीक ने ही फेक न्यूज को रोकने के तमाम उपाय बताए। आपको पता होगा कि ऐसे तमाम टूल्स अब आ गए हैं जो फेक न्यूज को काउंटर करते हैं। वह फैक्ट चेक करते हैं। वह तुरंत बता देते हैं कि जो यह फोटो ट्वीट किया गया है। आपने जैसे ही उसमें चेक किया वह कुछ प्वाइंट के जरिए खोज लेता है कि यह फोटो 20 साल पुराना है जो अब ट्वीट किया गया है या अलग घटना का है। इस घटना से इसका कोई रिलेशन नहीं है। एक यह बात हो गई कि तकनीक के सहारे हम इससे निपटने की पूरी तैयारी कर रहे हैं। मीडिया में तकनीक ने फैक्ट चेकिंग के इतने सारे टूल्स का सहारा लिया है कि अब उसे निकाल कर कोई चीज चली जाए, ऐसा संभव नहीं दिख रहा है। दूसरी बात यह है कि जब हम किसी बाजार में सब्जी लेने जाते हैं तो जो अच्छी चीज है वह हमें पता है। हम वही लेते हैं। बाजार में बहुत चीज बिक रही है, लेकिन हमको पसंद क्या है, हमें पसंद वह है जिसमें हमें विश्वास है। ऐसे ही हम किसी दुकानदार के पास जाते हैं, हम किसके पास जाते हैं, जिस पर हमें भरोसा है। तो मीडिया एक भरोसे का काम है। आप को जिस पर भरोसा होगा, आप उसी को देखेंगे। एक तो यह है कि हम तकनीक में प्रोफेशनली फैक्ट चेक करते हैं। फैक्ट चेक के टूल्स का इस्तेमाल करते हैं। उसके बाद अपने संवाददाताओं पर भरोसा करते हैं और तकनीक का सहारा लेते हैं। दूसरा यह है कि पब्लिक या जो हमारा श्रोता, पाठक या दर्शक है, उसको भी उसी पर विश्वास ज्यादा है जिसका वह लगातार इस्तेमाल कर रहा हो, जिससे उसको कभी धोखा नहीं हुआ है। हमको दो पक्षों में इसको देखना होगा। एक तो उसको चुनें, जो सही है और दूसरा संस्थाओं को। साथ ही मीडिया में जो लोग काम कर रहे हैं, उनको तकनीक के साथ चलना होगा।

**किसी भी खबर को प्रिंट मीडिया और टेलीविजन मीडिया में किस प्रकार दिखाया जाता है। दोनों की प्रस्तुति में क्या अंतर होता है?**

इसके दो तरीके हैं। अगर आप स्टूडेंट के नाते देखें तो इसके दो तरीके हैं। एक तो हम घटना का खाका खींचते हैं कि ऐसा हुआ होगा। आपके सामने एक चित्र बनता है कि ऐसा हुआ होगा। दूसरी ओर टेलीविजन में क्या होता है। एक घटना लाइव दिखाई जा रही है। उसकी व्याख्या करते हैं कि यह घटना हो रही, यह हुई क्यों, इसके पीछे क्या कारण हैं। हमारे पास सारे तथ्य होते हैं तो उनसे हम चित्र खींचते हैं। उनके पास चित्र होता है। उसकी वह व्याख्या करते हैं। केवल फर्क इतना है, न्यूज वही है। वह अच्छे विजुअल दिखाकर उसे व्याख्यायित करते हैं कि यह घटना हुई है। हम प्रिंट मीडिया में एक घटना का चित्र खींचते हैं कि उसको पढ़ते–पढ़ते वहां पहुंच जाएं। आपको पढ़ने से पता लग जाए कि अरे हां इतनी बड़ी घटना हो गई। बस इतना ही फर्क है। समाचार उनके पास भी है। समाचार हमारे पास भी है। बस फर्क यह है कि वह घटना की व्याख्या कर रहे हैं और हम जो प्रिंट के लोग हैं वह शब्दों से चित्र खींचते हैं। केवल इतना ही फर्क है।

**सर, हम मीडिया के विद्यार्थी हैं और हमें मीडिया एथिक्स पढ़ाया जाता है तो मेरा सवाल यह है कि जब हम ग्राउंड पर जाते हैं तो यह मीडिया हमारे कितने काम आता है या हम इसे कितना फॉलो कर पाते हैं?**

आप स्टूडेंट है तो यह आपको समझना चाहिए कि आप जितने भी सफल लोग देख रहे होंगे सफल जैसे कि पत्रकारिता में जिनका नाम माना जाता है, जिनकी खबर पर हम विश्वास करते हैं वह इसलिए आगे बढ़े हैं, क्योंकि वह एथिक्स से बंधे हुए हैं। हम जैसे ही डाइवर्ट होते हैं एथिक्स से, मीडिया का एथिक्स हो या जीवन का एथिक्स हो जैसे ही हम नैतिकता से अलग लाइन लेते हैं, सिद्धांतों से जैसे ही डाइवर्ट होते हैं, हमारा सबसे ज्यादा नुकसान होता है। क्या नुकसान होता है, कैपेबिलिटी यानी साख। हमारी साख गड़बड़ होती है। जिस भी व्यक्ति की साख गड़बड़ हो जाती है, जिस भी संस्थान की, जिस भी मीडिया की साख गड़बड़ हो गई तो वह दोबारा रीक्रिएट नहीं कर पाता अपनी पोजीशन को पुनः प्राप्त नहीं कर पाता।

इसलिए पत्रकारिता के बच्चों से खास तौर पर कहना है और जब भी हम बच्चों से बात करते हैं तो कहते हैं कि जो आपके संस्थान के एथिक्स हैं, जो मीडिया के एथिक्स हैं, जो समाज के एक व्यक्ति के रूप में आपके एथिक्स हैं उनका पालन निश्चित करें। आपका दायरा वही है। आपको हर चीज बतानी है, लेकिन बच्चा नाबालिग है। अपराधी है तो उसका नाम नहीं देना है, क्योंकि उसका भविष्य हमारे हाथों में है। हम किसी उत्साह में उस लाइन को पार नहीं करते हैं। हम किसी भी दुर्घटना में अगर लड़की है, हम उसका ज्यादा परिचय इसलिए नहीं दे सकते क्योंकि उसके संग उसका पूरा परिवार जुड़ा हुआ है। एक समाज है वह। उसका खुद का जीवन है और जो लोग इसका उल्लंघन करते हैं कि थोड़ी आजादी वह ले लेते हैं। फिर उनकी साख प्रभावित होती है। वह अपना तो नुकसान करते ही हैं। अपने साथ वे जिस संस्था में काम कर रहे हैं उसका भी नुकसान करते हैं। इसमें सबसे ज्यादा नुकसान समाज का होता है। इसलिए केवल मीडिया का ही नहीं, समाज का और संस्थान का भी जो एथिक्स है, उनका पालन करने से हम अपनी साख को मजबूत कर लेते हैं। इस बात को ध्यान में रखकर बच्चे काम करें तो वह पत्रकारिता में बेहतर काम करेंगे।

# डॉक्यूमेंट्री के जरिए उठाए समाज से जुड़े सवाल

हर्षित गोयल

**नई दिल्ली ।** रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में 19 सितम्बर 2023 को डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग की गई। इसमें विभाग के सीनियर विद्यार्थियों की बनाई पांच डॉक्यूमेंट्रीज को दिखाया गया। आयोजन में जहां एक ओर नए विद्यार्थियों को डॉक्यूमेंट्री निर्माण की प्रक्रिया समझाई गई। तो वहीं डॉक्यूमेंट्री बनाने वाले विद्यार्थियों को उनके काम में रह गई कमियों के बारे में बताया गया। साथ ही भविषय में इन गलतियों से बचने की सलाह दी गई।

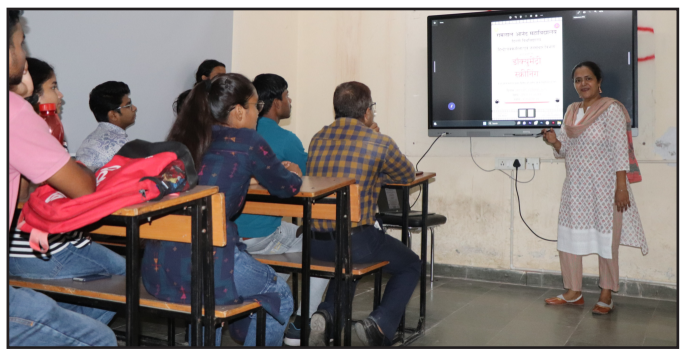

पत्रकारिता विभाग में विद्यार्थियों की डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन हुआ।

पत्रकारिता परिषद की ओर से आयोजित डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग की औपचारिक शुरुआत विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने की। उन्होंने कहा कि नए विद्यार्थी अपने सीनियर के अनुभवों से काफी कुछ सीख सकते हैं। कार्यक्रम में सबसे पहले तृतीय वर्ष की छात्रा निहारिका और शिवानी की, तिब्बती शरणार्थियों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। इसमें बताया गया कि किस प्रकार तिब्बत से आए हुए लोग भारत में रहते हैं। किस तरह उनके बच्चों की शिक्षा हो रही है। इसमें आध्यात्मिक गुरु दलाईलामा के प्रयासों और कामकाज को भी रेखांकित किया गया। इसके बाद निशा, अफसाना और कविता की बनाई 'कचरे में गुम जिंदगी' विषय पर तैयार डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। इसमें दिल्ली के सीमापुरी में रह रहे कूड़ा बीनने वाले लोगों का जीवन दिखाया गया। सार यह था कि सीमापुरी के नजदीकी एनजीओ कूड़ा बीनने वालों की कोई मदद नहीं करते हैं। इसकी वजह से वो लोग जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते हैं।

इसी क्रम में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की राजनीति को लेकर लक्ष्य और प्रभाकर की डॉक्यूमेंट्री में जेएनयू के परिदृश्य को दिखाया गया। जेएनयू की संस्कृति, उसका हॉस्टल, स्वतंत्रता, विद्यार्थी जीवन जैसे अनेकों मुद्दों को इसमें दिखाने का प्रयास किया गया।

इसके बाद रितु यादव की डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई, जिसमें 'गेटोर की छतरियां' जयपुर के शाही शमशान घाट को दिखाया गया। जयपुर के गेटोर में जितने भी राजा महाराजा हुए हैं, उनके स्मारक के रूप में ये छतरियां बनाई गई हैं। इन छतरियों के पास महिलाओं को जाने की अनुमति नहीं होती थी। नाहरगढ़ के किले का रास्ता भी इनसे होकर जाया करता था, जिसे बाद में बंद करवा दिया गया था।

अंत में रिया और प्रेरणा की बनाई डॉक्यूमेंट्री 'हुमायूं का मकबरा' भी दिखाई गई। इस मकबरे को 1993 में यूनेस्को की वर्ल्ड हे. रिटेज साइट में भी शामिल किया गया था। अंत में डॉ. अटल तिवारी व डॉ. निशा सिंह ने बच्चों को उनकी डॉक्यूमेंट्री की गलतियां बताई और उनको सुधारने के तौर–तरीकों पर भी बल दिया। इस दौरान विभाग के तीनों वर्षों के बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

कार्यक्रम में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार और प्राध्यापिका डॉ. सीमा भारती भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को समापन की ओर ले जाते हुए पत्रकारिता परिषद की अध्यक्ष श्रृंगारिका ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया तो वहीं कार्यक्रम को सफल बनाने में पत्रकारिता परिषद के उपाध्यक्ष आदित्य कनोजिया और विकास यादव सहित पत्रकारिता परिषद के अनेक पदाधिकारियों की सक्रिय भूमिका रही।

# फोटो पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए दानिश स्कॉलरशिप

कंचन गुप्ता

**नई दिल्ली ।** कैमरे के जरिए दुनिया से रूबरू करवाने के लिए फोटो पत्रकारिता की आवश्यकता को हम भलीभांति जानते हैं और फोटो पत्रकारिता की दुनिया में मानवीय कहानियों को बताने वाले फोटो पत्रकार दानिश सिद्दीकी का जिक्र करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि सिद्दीकी ने खुशी और पीड़ा के मानवीय चेहरे को कैद किया और उन लोगों को आवाज देने की कोशिश की, जिनके पास कोई नहीं था। वह राष्ट्रीय रॉयटर्स मल्टीमीडिया टीम के प्रमुख थे, जो अफगानिस्तान पर तालिबान की विजय को कवर करते हुए 16 जुलाई 2021 को मारे गए थे। उनका मानवीय कहानियां बताने का समर्पण प्रशंसा के काबिल था। उनकी इसी काबिलियत की वजह से उन्हें रोहिंग्या शरणार्थी संकट का दस्तावेजीकरण करने के लिए साल 2018 में पुलित्जर पुरस्कार से नवाजा गया था। उनके सम्मान और उनके प्रतिबिंब को आने वाले युवा फोटो पत्रकार में विकसित करने के लिए रॉयटर्स ने दानिश सिद्दीकी 12 महीने की फोटो जर्नलिज्म इंटर्नशिप की शुरुआत की है। इसके लिए आवेदन स्वीकार किये जा रहे हैं।

दानिश सिद्दीकी

इंटर्नशिप में शुरुआती फोटो पत्रकार भारत समाचार ब्यूरो में एशिया फोटो एडिटर के मार्गदर्शन में अपने दृश्य कहानी कहने की क्षमताओं को विकसित करने का अवसर प्राप्त करेंगे। इंटर्नशिप स्थायी निवासी या भारतीय नागरिकता प्राप्त 5 साल से कम अनुभव वाले फोटोग्राफर छात्रों और फोटो जर्नलिस्टों के लिए है। आवेदन करने के लिए आवेदकों को 20 से 30 फोटो के साथ एक पोर्टफोलियो जमा करना होगा। उम्मीदवारों को अपनी सामग्री 31 अक्टूबर से पहले जमा करनी होगी।

# पत्रकारिता परिषद के गठन में बच्चों की रुचि

शाम्भवी

**नई दिल्ली ।** हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के द्वारा पत्रकारिता परिषद के गठन के लिए बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक 12 सितंबर 2023 को हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की लैब में संपन्न हुई। बैठक के बाद विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुसार परिषद के पद सौंपे गए। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के संयोजक प्रो. राकेश कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुए इस बैठक में पत्रकारिता परिषद के अध्यक्ष के तौर पर श्रृंगारिका उपाध्याय को चुना गया, जो हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की तृतीय वर्ष की छात्रा हैं। उपाध्यक्ष के तौर पर तृतीय वर्ष के आदित्य कनौजिया और द्वितीय वर्ष के विकास यादव को चुना गया। समिति के सचिव के तौर पर तृतीय वर्ष की निशा मिश्रा की नियुक्ति की गई। इसी के साथ संयुक्त सचिव के पद के लिए तृतीय वर्ष की मीनाक्षी पंत और द्वितीय वर्ष की शाम्भवी को मनोनीत किया गया।

कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी द्वितीय वर्ष के हर्षित गोयल को दी गई। इसी के साथ कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में प्रेरणा, खुशी, दिव्या, जया सिंह, सोनिका और अरविंद को नियुक्त किया गया।

गौरतलब है कि पत्रकारिता परिषद के गठन के लिए सभी विद्यार्थियों से नाम मांगे गए थे। विद्यार्थियों ने 28 अगस्त 2023 तक अपने मनपसंद के विभिन्न पदों के लिए अपना नामांकन करवाया। इस बैठक में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तावित नाम पर गहन चर्चा के बाद पत्रकारिता परिषद का गठन किया गया है। इस परिषद के गठन का उद्देश्य आने वाले दिनों में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग को उन्नति और विकास के पथ पर ले जाना है। अनेक कार्यक्रम कराने हैं।

# प्लेसमेंट सेल का लाभ उठाएं विद्यार्थी

आशीष पांडेय

**नई दिल्ली ।** दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद कॉलेज में विद्यार्थियों को करिअर काउंसलिंग एंड कैंपस प्लेसमेंट की जानकारी दी गई, जिसमें हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी मौजूद थे। साथ ही विद्यार्थी इस सुविधा का लाभ कैसे उठा सकते हैं इसकी जानकारी भी उन्हें दी गई। इसी से संबंधित कॉलेज के पाथवे नामक कैंपस प्लेसमेंट सेल ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।

विद्यार्थियों को उनके रुचि के अनुसार किसी भी फील्ड में जाने का सही मार्गदर्शन भी दिया गया। विद्यार्थियों को सॉफ्ट कोर स्किल्स और हार्ड कोर स्किल्स के बारे में बताया गया। सॉफ्ट कोर स्किल्स जैसे कि कम्युनिकेशन और समय निर्धारण।

हार्ड कोर स्किल्स जैसे कि कोडिंग (जावा, पाइथन) आदि। स्नातक पूर्ण करने के बाद अगर कोई विद्यार्थी जॉब और परास्नातक करने के बीच उलझा हुआ है तो हम उसे सलाह देंगे कि उसके लिए भविष्य में क्या अधिक बेहतर होगा और कैसे वो जॉब करने से पहले अपना एक बेहतर पोर्टफोलियो तैयार कर सकता है। पाथवे प्लेसमेंट सेल की सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होने की जानकारी भी विद्यार्थियों को दी गई, जिससे भविष्य में विद्यार्थियों को प्लेसमेंट सेल से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी लेनी हो तो वो उनसे सोशल मीडिया के जरिए प्राप्त कर सकते हैं।

लिंक्डइन, इंस्टा, ट्विटर, फेसबुक जैसे सोशल माध्यमों का उपयोग कर विद्यार्थी कोई भी जानकारी हासिल कर सकते हैं। लोगों ने बताया कि जितना अधिक जागरूक होंगे उतनी ही सटीक जानकारी आप को मिलेगी।

# लक्ष्मी हरि स्मृति उपन्यास सम्मान

उत्कर्ष कुमार

**नई दिल्ली ।** आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैंपस) के सभागार में लक्ष्मी हरि स्मृति उपन्यास सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन मैथिली और हिंदी के लेखकों और उनके उपन्यास को सम्मानित करने के लिए किया जा रहा है। यह कुल चार सत्र में आयोजित किया जायेगा।

आयोजन का पहला सत्र 'उपन्यास अवधारणा और भारतीय उपन्यास' दोपहर दो बजे से शुरू किया जाएगा। इसका बीज वक्तव्य अच्युतानंद मिश्र देंगे। हरिदास जी की आत्मकथा "जनम जुआ मति हरयु" के अंश पाठ पर सोनी नीलू झा प्रकाश डालेंगे। वहीं दूसरा सत्र दोपहर 2:45 बजे से शुरू किया जायेगा। इस सत्र में मैथिली में उपन्यास लेखन और उनके सरोकार एवं चिंताएं पर जोर दिया जायेगा। इसकी अध्यक्षता गंगेश गुंजन और मुख्य वक्ता अशोक, कमलानन्द झा, मीना झा और अकबर रिजवी होंगे। इसमें मैथिली में उपन्यास लेखन,उससे लगाव और मैथिली भाषा को लेकर चिंताए व्यक्त की जाएंगी।

इसके बाद कुछ समय चाय के लिये अवकाश होगा। फिर संध्या पांच बजे से तीसरा सत्र शुरू होगा। इसकी अध्यक्षता तारानंद वियोगी और मुख्य वक्ता के तौर पर ज्ञानतोष कुमार झा, देवशंकर नवीन और अरविंद कुमार मिश्र होंगे। इसमें समकालीन मैथिली उपन्यास भाषा और शिल्प पर चर्चा होगी। अंतिम और चौथा सत्र संध्या सात बजे शुरू किया जायेगा। इसके बाद शाम साढ़े सात बजे भोजन की व्यवस्था की जाएगी।

ज्ञातव्य हो कि इस पुरस्कार का आरम्भ मैथिली–हिन्दी के लेखक श्रीधरम और उनकी पत्नी प्रोमिला ने अपने माता–पिता महालक्ष्मी और हरिदास जी की स्मृति में किया है। हरिदास की आत्मकथा 'जनम जुआ मति हारहु' पिछले साल प्रकाशित होकर चर्चित हुई थी। वर्ष 2020 में पहला 'लक्ष्मी–हरि स्मृति उपन्यास सम्मान' सच्चिदानंद सच्चू को उनके उपन्यास 'लालटेनगंज' के लिए दिया गया था।

# मैं मगध का नहीं, अवन्ती का हूं : श्रीकांत वर्मा

आर्यन

**नई दिल्ली ।** चर्चित लेखक श्रीकांत वर्मा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 18 सितम्बर 2023 को छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद की ओर से एक कार्यक्रम का आयोजन करने की तैयारी है। कार्यक्रम में प्रभात त्रिपाठी, रायगढ़ से अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि के रूप में ओम थानवी आमंत्रित किये गये थे। कार्यक्रम को कई सत्र में विभाजित किया गया है, जिसका शुभारंभ 18 सितंबर को प्रातः 10 बजे से होगा। यह सत्र करीब एक घंटे का होगा।

प्रथम सत्र में मूल रूप से कविता, कहानी और पत्रकारिता को रखा गया है, जिसका समय सुबह 11 बजे से दोपहर एक बजे तक रखा गया है। इसमें जयपुर से आने वाले ओम थानवी, रायगढ़ से आने वाले प्रभात त्रिपाठी, दिल्ली से आने वाले विनोद तिवारी, भालचंद्र जोशी आदि के वक्तव्य रखे गये हैं।

द्वितीय सत्र मूलतः कहानी समय का था, जिसका समय अपरान्ह चार बजे से छह बजे तक रखा गया है। कहानीकारों में ग्रामीण पृष्ठभूमि के कथाकार माने जाने वाले लखनऊ से शिवमूर्ति, भाल. चंद्र जोशी और कैलाश वनवासी उपस्थित रहेंगे। तृतीय सत्र कविता पर रखा गया है। इसका समय शाम छह से आठ बजे तक रखा गया है। इसमें शामिल होने वाले कवियों में प्रभात त्रिपाठी, त्रिलोक महावर, आलोक वर्मा, सुधीर सक्सेना, संजीव आदि हैं। बाकी चार सत्र 19 सितंबर को दूसरे दिन रखे गये।

चतुर्थ सत्र में श्रीकांत वर्मा का साहित्यिक अवदान–मैं सदियों के अंतराल में रहा' शीर्षक के तहत किया गया। इसका समय सुबह 10:30 बजे से 11 बजे तक रखा गया। पांचवां सत्र फिर से कहानी का रहा, जो सुबह साढ़े 11 बजे से डेढ़ बजे तक प्रस्तावित है।

छठे सत्र में कविता पर बात करनी प्रस्तावित है। इसका समय शाम चार बजे से छह बजे तक था। अंत में सातवां सत्र नाटक प्रस्तुति का रखा गया। समय शाम सात बजे से रात्रि नौ बजे तक प्रस्तावित था, जिसका निर्देशन भोपाल के सौरभ अनंत को करना था। नाटक की प्रस्तुति सिम्स ऑडिटोरियम, बिलासपुर में विहान ड्रामा वर्क्स (भोपाल) की ओर से प्रस्तावित थी। कार्यक्रम में प्रसिद्ध हिंदी लेखकों, कवियों ने श्रीकांत वर्मा को याद कर उनकी मूर्ति पर पुष्प अर्पित किया।

श्रीकांत जी की मृत्यु 1986 में हो गई थी, पर उनका योगदान हिंदी साहित्य को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में हमेशा याद किया जाएगा।

# जीवन शैली का अहम अंग है वाद–विवाद

फरदीन अनीस

**नई दिल्ली।** दिल्ली विश्वविद्यालय के जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय में छह अक्टूबर को हिन्दी वाद विवाद समिति अभिव्यक्ति ने रणनीति एवं महत्वपूर्ण चरण को लेकर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें जानकी देवी महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. स्वाति पाल, राम लाल आनंद महाविद्यालय से हिन्दी विभाग के प्रो. राकेश कुमार और जानकी देवी महाविद्यालय से वाणिज्य विभाग की प्रो. अमिता चरण मौजूद रहीं। संयोजक डॉ. रजनी बाला अनुरागी व जीना मैरी लाकाडोंग थीं।

आयोजन में प्रो. राकेश कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि वाद विवाद इस तथ्य को स्थापित करता है कि वह समाज सोया हुआ या मृत नहीं है। अपितु इस समाज ने विकास और संरक्षण का कार्य अपने हाथों में लिया हुआ है। जितनी भी प्राचीन सभ्यता रही हैं उसमें वाद विवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन ग्रीक सभ्यता में वाद विवाद जीवन शैली का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग माना जाता था। महान दार्शनिक सुकरात, अरस्तू और प्लेटो ने तर्क के जरिए ही ग्रीक समाज को नया आकार प्रदान किया था। प्राचीन भारत में भी वाद विवाद की परम्परा देखने को मिलती है। शास्त्रार्थों में विद्वान, धार्मिक और दार्शनिक मुद्दों पर तर्क–वितर्क किया करते थे। कृष्ण भक्ति धारा में भी हमें वाद विवाद की परम्परा देखने को मिलती है, जिसका प्रमुख उदाहरण भ्रमर गीत हैं। बौद्ध धर्म में भी बौद्ध भिक्षु संग में रहकर तर्क–वितर्क करते थे।

आयोजन में यह भी बताया गया कि वाद विवाद किसी भी विषय पर सम्भव है, लेकिन यह ज्यादा तर धार्मिक और दार्शनिक मुद्दों पर देखने को मिलते हैं। आधुनिक समय में भी वाद विवाद की यह प्रकिया निरंतर चली आ रही है, जिसका सबसे अच्छा उदाहरण हमें भारत के संविधान निर्माण के समय संविधान सभा की डिबेट में देखने को मिलता है। अंत में वाद विवाद के चरण, वाद विवाद कर्ता के गुण, भाषा एवं शब्दों पर पकड़, विषय का अध्ययन आदि पर भी चर्चा हुई।

## जी–20 समारोह में उठाए गए मुद्दे

खुशी वशिष्ठ

**नई दिल्ली।** भारत के कुशल नेतृत्व में जी–20 के सफल आयोजन के पश्चात 10 अक्टूबर 2023 को रामलाल आनंद महाविद्यालय की वाद विवाद समिति आरोह ने समारोह का आयोजन किया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में ग्लोबल काउंसिल ऑफ इनोवेशन एंड इंडस्ट्री के दिनेश अग्रवाल मौजूद रहे। महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथि सहित सभी लोगों का स्वागत किया। जी–20 कमेटी के अध्यक्ष की भूमिका में मनस्वी बांगड़ और उपाध्यक्ष हिमांशु कुमार रहे। इसमें 39 देश के प्रति. निधियों और आठ अंतर्राष्ट्रीय प्रेस के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैश्विक स्तर की राजनीति की समझ एवं कूटनीतिक कौशल का विकास करना था। सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि के रूप में धर्मवीर कुमार पुरस्कृत हुए । इसी तरह से द्वितीय स्थान पर रहे प्रथम वर्ष के वंश। सर्वश्रेष्ठ पत्रकार का पुरस्कार हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की सो. निका ने अपने नाम किया।

पत्रकारिता के विद्यार्थियों को कैमरे का प्रयोग सिखाते प्रो. अमित चावला।

## पत्रकारिता में फोटोग्राफी का महत्व जाना

अरविंद सिंह

**नई दिल्ली ।** हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने एक कार्यशाला का आयोजन किया, जिसका विषय था "फोटोग्राफी–तब और अब"। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में एमिटी यूनिवर्सिटी के प्रो. अमित चावला मौजूद रहे। कार्यशाला की शुरुआत कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. निशा एवं डॉ. अटल तिवारी की ओर से अमित चावला को पौधा देकर हुई। कार्यशाला आयोजित कराने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को वर्तमान पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में कैमरा और फोटोग्राफी के महत्व एवं संबंधित तकनीकी जानकारियों से अवगत करवाना था।

अपने संबोधन की शुरुआत करते हुए अमित चावला ने उल्लेख किया कि फोटो की क्वालिटी थोड़ा खराब हो तो चल जाएगा लेकिन कंटेंट की क्वालिटी पर असर नहीं पड़ना चाहिए। साथ ही उन्होंने फोटोग्राफी के क्षेत्र में एवं पद्मश्री से सम्मानित रघु राय के साथ अपने निजी अनुभव भी साझा किए। उन्होंने कैमरे से संबंधित मूलभूत जानकारी सभी के साथ साझा की और बहुत सारे अनोखे और सदी के अधिकतम उपयोग होने वाले कैमरों से विद्यार्थियों को परिचित करवाया। इसके अलावा उन्होंने कोडक ब्राउनी कैमरे का विशेष उल्लेख किया, क्योंकि पत्रकारिता जगत में इसका अधिक प्रयोग किया गया है। कार्यक्रम में प्राध्यापक डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा सिंह और डॉ सीमा भारती मौजूद रहीं। इस आयोजन में तीनों वर्षों के विद्यार्थियों की बढ़–चढ़कर भागीदारी रही।

## सभा की मासिक शृंखला

**नई दिल्ली ।** राजकमल प्रकाशन समूह और भारत पर्यावास केंद्र की प्रख्यात मासिक शृंखला 'सभा' के द्वितीय सत्र में 9 अक्टूबर, 2023 को एक विमर्श आयोजित किया गया, जिसका शीर्षक था "राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद"। इसमें लेखक अपूर्वानंद, व इतिहासकार रमाशंकर ने एस इरफान हबीब, जोया हसन, बद्री नारायण व रतनलाल से निर्धारित विषय पर विचार विमर्श किया। कार्यक्रम की शुरुआत तय समय पर हुई, जिसमें शुरुआती 50 मिनट रमाशंकर के सवालों के लिए रहे और बाद के 40 मिनट दर्शकों के सवाल के लिए रखे गए।

## सामाजिक समरसता पर रखे विचार

आशीष पांडेय

**नई दिल्ली ।** सांप्रदायिक सद्भावना समाज ने 19 सितंबर को ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य "सामाजिक समरसता समझौते पर पुनर्विचार और संभावना" व्यक्त करना था। आयोजक की भूमिका में प्रो. आनंद कुमार थे, जो साम्प्रदायिक सद्भावना समाज के अध्यक्ष है। उनके साथ प्रो. अरविंदर अंसारी मॉडरेटर के रूप में जुड़ी थीं। कौशल कुमार वक्ता के रूप में मौजूद थे, जो समाजसेवी और पत्रकार हैं।

मीटिंग की शुरुआत प्रो. आनंद कुमार ने करते हुए कहा कि मुट्ठी भर लोग धर्मों की ठेकेदारी कर रहे हैं। कौशल किशोर ने 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले युद्ध के जिक्र से अपने भाषण की शुरुआत की और इस बात पर जोर देते हुए बताया कि क्यों 19 सितंबर एक अहम दिन है। उन्होंने बताया कि उसी दिन बलवंत राय मेहता शहीद हुए थे। उनकी दृष्टि में आजाद भारत के सबसे बड़े शहीद बलवंत राय मेहता हैं। उनका मानना है कि दुनिया में जब से लोकतंत्र की शुरुआत हुई है। उसके बाद से शहादत देना राजघरानों के नसीब में नहीं रहा। शहादत सिर्फ अन्य नागरिकों, जैसे किसान, जवान एवं अन्य लोगों के नसीब में रही।

सांप्रदायिक सद्भावना विषय पर बात करते हुए उन्होंने 1857 की क्रांति का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि कैसे उस क्रांति में हिंदू और मुस्लमान दोनों ही एक साथ अंग्रेजी सत्ता का विरोध कर रहे थे, जो सांप्रदायिक सद्भावना की एकता को भली भांति दर्शाता है।

उन्होंने भारत की आजादी में अपना योगदान देने वाले विभिन्न क्रांतिकारियों का भी जिक्र किया। इसमें सावरकर, सुभाष चंद्र बोस, मोती लाल नेहरू, लाला लाजपत राय, देश बंधु चितरंजन दास आदि का उल्लेख किया। उन्होंने यह भी कहा कि सांप्रदायिक सद्भावना शब्द का प्रयोग करना गलत है क्योंकि इस शब्द में कहीं न कहीं हिंसा छुपी हुई है।

## आरएलए में 20 अक्टूबर से क्रिकेट मैच का सिलसिला

संजीव राज

**नई दिल्ली ।** राम लाल आनंद कॉलेज में शारीरिक शिक्षा विभाग की ओर से एक उत्कृष्ट खेल उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह खेल उत्सव 3 अक्टूबर से 8 नवंबर तक चलेगा। इस महोत्सव के पहले चरण में टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन 3 अक्टूबर को हुआ, जिसमें वाणिज्य विभाग के द्वितीय वर्ष के छात्र ध्रुव प्रताप चौधरी ने बाजी मारी। इस उत्सव में विभिन्न प्रतिस्पर्धा होंगी, जिसमें क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन और अन्य खेल शामिल हैं। छात्र–छात्राएं इस खेल उत्सव में भाग लेकर अपनी कौशलता को प्रदर्शन करेंगे और ट्रॉफी और पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। इस खेल उत्सव में सभी विभाग के छात्र–छात्राएं बढ़–चढ़ के हिस्सा ले रहे है । खिलाड़ियों के साथ दर्शकों में भी उत्साह देखा जा रहा है। यह आयोजन छात्र–छात्राओं के बीच में एक रोमांचक और शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान करेगा। सुबह से ही खिलाड़ी अभ्यास के लिए मैदान में पहुंच जाते हैं। इस आयोजन के माध्यम से छात्रों को शारीरिक शिक्षा के प्रति जागरूक करना है।

## उदयपुर फिल्म फेस्टिवल:तीन दिन में कई अहम फिल्में देखने को मिलीं

जया सिंह

**नई दिल्ली ।** फिल्में मनोरंजन का एक बेहतरीन स्रोत हैं, लेकिन ये फिल्में मनोरंजन के साथ ज्ञान और समाजिक पहलुओं पर भी पूरी तरह ध्यान देती हैं।

इसी तरह की फिल्मों को लोगों तक पहुंचाने के लिए उदयपुर फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नाम प्रतिरोध का सिनेमा रखा गया, जिसकी शुरुआत 2006 में गोरखपुर फिल्म फेस्टिवल से हुई थी। 12 वर्षों में यह कार्यक्रम 11 राज्यों के कई कस्बों और शहरों में हुआ है। 2013 मे उदयपुर फिल्म सोसाइटी की शुरुआत हुई थी। उदयपुर फिल्म फेस्टिवल




तीन दिवसीय कार्यक्रम है, यह 30 सितंबर से दो अक्टूबर तक उदयपुर मे आयोजित किया गया। हर दिन यहां अलग–अलग तरह की फिल्म, शॉर्ट फिल्म व संगीत को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के परिसर मे इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया। प्रथम दिन उद्घाटन समारोह तथा अतिथियों के भाषण के साथ प्रारंभ हुआ। इसके बाद फिल्में दिखाने का सिलसिला शुरू हुआ। साथ ही दिखाई गई फिल्मों पर चर्चा हुई। उसके बाद थोड़ा समय भोजन आदि के लिए रखा गया था। फिर कुछ शॉर्ट फिल्में जैसे–चदरिया, डकैत, कबीर–बुरा न मिल्या कोय आदि पर चर्चा की गई। इसके बाद कुछ समय नाश्ते आदि के लिए रखा गया। हर फिल्म के निर्माता तथा निर्देशक कार्यक्रम में मौजूद थे, जिनसे फिल्मों के ऊपर चर्चा की गई। दूसरा दिन मुख्यतः वीडियो संगीत के संग शुरू किया गया, उसके पश्चात सामाजिक न्याय पर आधारित फिल्मों आदि को दिखाया गया।

तीसरे दिन मुख्यत दस्तावेजी फिल्मों को दिखाया गया है, इस दिन 'हू किल्ड गाँधी?', टू मच डेमोक्रेसी.. जैसी फिल्में दिखाई गईं। इसके साथ ही उन पर चर्चा भी की गई। कार्यक्रम के दौरान निर्माता एवं निर्देशक अनामिका हक्सर से भी खास बातचीत की गई। उदयपुर फिल्म सोसाइटी द्वारा इस कार्यक्रम का समापन अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन के बाद किया गया। यह एक आम जन सहयोग से किया गया आयोजन था। इसलिए इसमें सभी का प्रवेश मुफ्त था। यह पूरी तरह से निशुल्क कार्यक्रम था। कार्यक्रम के सभागृह के बाहर के.पी. ससी के काम की प्रदर्शनी के साथ कई प्रकार के स्टाल भी उपलब्ध थे, जिन्हें लोगों ने निहारा।


**संरक्षक मंडल**

**प्राचार्य**

**प्रो. राकेश कुमार गुप्ता**

**विभाग संयोजक**

**प्रो. राकेश कुमार**

**परामर्शदाता**

**डॉ. अटल तिवारी**

**संपादक**

निशा मिश्रा

**संपादकीय सहयोग**

आदित्य कनोजिया

प्रभाकर मल्ल